सामान्यीकरण (Normalization)

APPOINTMENTS

NOTES

02

अक्षम व्यक्तियों के लिये सामान्यीकरण की अवधारणा इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि समाज में अक्षम व्यक्तियों को सामान्य मानकर चला जाये और इनकी समस्याओं को दूर करने के सम्मिलित प्रयत्न इस प्रकार से किये जायें कि अक्षम व्यक्तियों को अपनी अक्षमता के कारण हीनता का अनुभव न हो। इस प्रकार सामान्यीकरण की अवधारणा अक्षम व्यक्तियों में जीवन परिस्थितियों को सामान्य बनाने से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत अक्षम व्यक्तियों में इस प्रकार की योग्यता का विकास किया जाता है जिससे वे सामान्य जीवन जी सकें। भारतीय कक्षाओं में असमानताओं एवं विविधताओं के आधार पर सामान्यीकरण का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के निहितार्थ व्यापक रूप में किया जाता है। सामान्यीकरण की अवधारणा के आधार पर ही वर्तमान समय में विशिष्ट बालकों के लिये विशेष शिक्षा प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ है तथा प्रत्येक गतिविधि में बालक को आगे बोलने का अवसर दिया जाता है। सामान्यीकरण के आधार पर ही समावेशित अधिगम व्यवस्था को जन्म मिला है, जिसके आधार पर परिवेशीय संसाधनों का उपयोग व्यापक रूप से किया जाता है। विषयवस्तु के चयन में भी इसका प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है। क्योंकि जब तक कोई भी विषयवस्तु छात्रों के जीवन से संबंधित नहीं होगी तथा उपयोगी नहीं होगी तब तक छात्र उसे सीखने

❖ Humility is the key to quick success.

Scanned with CamScanner

का प्रयास नहीं करेगा। इसलिए प्राथमिक स्तर पर विषय वस्तु का चयन भी परिवेशीय सामग्री के आधार पर किया जाता है। इसी प्रकार छात्रों के समक्ष विभिन्न प्रकार के उदाहरण भी उनके परिवेश एवं जीवन से सम्बद्ध किये जाते हैं। इस प्रकार शिक्षण अधिगम नीतियों में भी इसका प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है। साथ ही विशेष आवश्यकता वाले बालकों के लिए शिक्षणशास्त्र एवं पाठ्यचर्या में विशेष विषय रखे जाते हैं, विशेष शिक्षण विधियों एवं शैक्षिक उपकरणों की व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार सामान्यीकरण की अवधारणा का प्रयोग शिक्षणशास्त्र एवं पाठ्यचर्या के संदर्भ में शिक्षा व्यवस्था में व्यापक रूप से किया जाता है। प्रत्येक शिक्षक का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सामान्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए प्रत्येक प्रशिक्षु को समावेशित परिस्थितियों में शिक्षण करने के लिए योग्य बनाया जाता है। समावेशित परिस्थितियों में शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिये प्रशिक्षुओं को निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिये, जिससे कि सभी प्रकार के छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव हो सके —

(i) सभी शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया को रुचिपूर्ण बनाने का प्रयास करना चाहिये, जिससे कक्षा का प्रत्येक छात्र शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में रुचि ले सके

Let a man overcome anger by kindness, evil by good. ❖

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS NOTES

04

तथा अधिगम स्तर को उच्च बना सके।

(2) शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले बालकों को प्रदान की जाने वाली सभी सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिये जिससे उनकी अक्षमता शिक्षण के मार्ग में बाधा न बन सके।

(3) शिक्षक को सदैव गतिविधि आधारित एवं बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिये, जिससे छात्रों को यह अनुभव हो सके कि उनका भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है।

(4) शिक्षण करते समय शिक्षकों को व्यापक रूप से शिक्षण अधिगम सामग्री एवं खेलों का प्रयोग करना चाहिये क्योंकि प्राथमिक स्तर पर खेलों का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है तथा बालकों की खेलों में रुचि होती है।

(5) शिक्षक द्वारा समायोजित परिस्थितियों में छात्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार होना चाहिए, उनकी प्रत्येक त्रुटि के लिये उनको प्रताड़ित नहीं करना चाहिये जिससे कि छात्रों का शैक्षिक विकास सम्भव हो सके।

(6) शिक्षक को सदैव प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं अशैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर ध्यान देते हुए कार्य योजना का निर्माण करना चाहिये, जिससे निर्धारित उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सके।

❖ If money goes before, always doors lie open.

April Th 1 Fr 2 Sa 3 Su 4 Mo 5 Tu 6 We 7 Th 8 Fr 9 Sa 10 Su 11 Mo 12 Tu 13 We 14 Th 15 Fr 16 Sa 17 Su 18 Mo 19 Tu 20 We 21 Th 22 Fr 23 Sa 24 Su 25 Mo 26 Tu 27 We 28 Th 29 Fr 30 Sa •

Scanned with CamScanner

सामान्यीकरण का स्वरूप एवं क्षेत्र (Scope and forms of Normalization)

पृथक बालकों के सामान्यीकरण का स्वरूप एवं क्षेत्र का ज्ञान एक शिक्षक को पूर्ण रूप से होना चाहिये क्योंकि सामान्यीकरण के विभिन्न पक्षों का प्रबंध करना आवश्यक होता है, जिससे उसके सार्थक परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं क्योंकि समावेशित अधिगम में प्रत्येक बालक को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाभ होता है। अतः भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में विविधताओं तथा अलगानताओं के कारण विभिन्न प्रकार के सामान्यीकरण अग्रलिखित रूप में देखे जा सकते हैं :—

1. पाठ्यचर्या में सामान्यीकरण :—

सामान्यीकरण का यह प्रथम एवं प्रमुख क्षेत्र माना जाता है क्योंकि सामान्यीकरण का प्रारंभ इस सोपान से ही होता है। इसके अन्तर्गत शिक्षक को निम्नलिखित तथ्यों का प्रबन्ध करना चाहिए जिससे समावेशन की प्रक्रिया सरलता से हो सके —

(i) इसमें पाठ्यचर्या से उन सभी प्रकरणों का चयन करना चाहिए जिसके आधार पर सामान्यीकरण की पूर्ण सम्भावना हो। इससे समावेशी शिक्षा की प्रक्रिया सरल रूप में सम्पन्न की जाती है।

(ii) पाठ्यचर्या के अन्तर्गत उन विषयों को चयन करना चाहिये जो कि सरल एवं विशिष्ट छात्रों से

Look before you leap; see before you go. ❖

Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 May

Scanned with CamScanner

विशिष्ट छात्रों से सम्बन्धित हों। इससे सामान्यीकरण की प्रक्रिया में रुचि एवं क्रमबद्धता होगी।

(iii) पाठ्यचर्या के समस्त प्रकरण एक-दूसरे से सम्बन्धित नहीं होते, इसलिए उन प्रकरणों का ही चयन करना चाहिये जो एक दूसरे से संबंधित है तथा सामान्यीकरण में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करते।

(iv) पाठ्यचर्या को क्रमबद्ध रूप से अर्थात समावेशित दृष्टि से तैयार किया जाना चाहिये। यदि ऐसा सम्भव नहीं है तो शिक्षक द्वारा पाठ्यचर्या के प्रकरणों को अपनी आवश्यकता के अनुसार क्रमबद्ध करके समावेशित अधिगम की व्यवस्था करनी चाहिये।

(v) पाठ्यचर्या के क्रम एवं प्रकरणों के शिक्षण क्रम में परिवर्तन का शिक्षक को पूर्ण अधिकार होना चाहिए जिससे सामान्यीकरण की प्रक्रिया को छात्रों की योग्यता एवं स्तर के अनुकूल बनाया जा सके।

(2) समय प्रबन्धन में सामान्यीकरण, समावेशित अधिगम के प्रबन्धन मे समय सारिणी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामान्य रूप से समय सारिणी को मानक रूप मे इसका दृढ़ता से पालन किया जाता है परन्तु समावेशित अधिगम मे इसमे परिवर्तन करना आवश्यक होती है। शिक्षक का यह प्रयास होना चाहिए कि सम्पूर्ण

Scanned with CamScanner

कार्य निर्धारित समय मे ही पूर्ण हो जाय। परन्तु, अपूर्णता की स्थिति मे कार्य को अधूरा नही छोड़ना चाहिये। इसके लिए भले ही समय सारिणी मे परिवर्तन करना पड़े। समय प्रबन्ध के लिये निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान मे रखना चाहिये

(i) समावेशित अधिगम प्रक्रिया के लिये समय सारिणी मे समावेशित विषयो के लिये पूर्ण समय की व्यवस्था करनी चाहिये जिससे प्रत्येक प्रकरण को निर्धारित समय मे पूर्ण किया जा सके।

(ii) समय सारिणी मे उपलब्ध संसाधनो के प्रयोग किसभाव - नाओ पर पूर्ण विचार किया जाना चाहिये तथा उन संसाधनो के अनुसार ही समय की व्यवस्था की जानी चाहिये।

(iii) समय सारिणी के अनुसार प्रत्येक विषय के समावेशित प्रकरण को उचित स्थान मिलना चाहिये जिससे कि सभी विषय एवं प्रकरणो को छात्र सरल एवं प्रभावी रूप मे अधिगम कर सके।

(iv) समय सारिणी मे सर्वप्रथम गतिविधियों को स्थान छात्रो की स्थिति के अनुसार देना चाहिये, जैसे - प्रारम्भ मे छात्रो को कुछ कठिन गतिविधियाँ प्रदान की जाती है। इसके बाद थकने पर मनोरंजन गतिविधियाँ प्रदान की जाती है। इस प्रकार छात्रो के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(V) समय सारिणी मे कालांश समय, प्राथमिक स्तर पर छात्रो की योग्यता एवं स्तर के अनुसार होना चाहिये क्योंकि इस अवस्था मे छात्रो को शारीरिक एवं मानसिक थकान दोनो ही शीघ्रता से होती है।

(3) अधिगम गतिविधियों मे समान्यीकरण —
समावेशित अधिगम की सफलता गतिविधियो के प्रबन्धन पर निर्भर करती है। जब किसी विषय के लिये विशेष आवश्यकता वाले छात्रो की रुचि एवं योग्यता के अनुसार गतिविधियो का चयन किया जाता है तो इन छात्रो की जिज्ञासा सक्रियता की ओर अग्रसर होती है, जिससे समावेशित अधिगम की संकल्पना मे वृद्धि होती है तथा छात्रो का अधिगम स्तर उच्च होता है इसके विपरीत स्थिति मे न तो समावेशित अधिगम ही प्रभावी रूप मे सम्पन्न होती है और न ही छात्रो का अधिगम स्थायी एवं उच्च रूप मे होती है। अतः अधिगम गतिविधियो के प्रबन्धन मे निम्नलिखित तथ्यो को ध्यान मे रखते हुए समावेशित अधिगम के उद्देश्यो को सरलता से प्राप्त किया जा सके —

(i) गतिविधियो का प्रबन्धन करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि विद्यालय मे गतिविधियो को सम्पन्न करने मे विशिष्ट बालको के लिये आवश्यक साधन है या नही। इससे गतिविधियो को सम्पन्न करने मे बाधा उत्पन्न नही होती।

(ii) गतिविधियों के ~~रूप~~ स्वरूप इन छात्रो के स्तर अनुकूल होनी चाहिये, जैसे - प्राथमिक स्तर पर गतिविधियो के

Scanned with CamScanner

रूप मे कविता, कहानी एंव खेलो को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए क्योकि इस स्तर पर ~~गतिविधि~~ बालक इसमें पूर्ण रुचि लेते है।

(iii) गतिविधियो का प्रबन्धन करते समय छात्रो की रुचि एंव योग्यता के अनुसार ही किया जाना चाहिये, जिससे कि सभी छात्र उन गतिविधियों मे पूर्ण सहभागिता का प्रदर्शन कर सके।

(iv) गतिविधियों का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिये जिससे कि छात्रो को शारीरिक एंव मानसिक रूप से कार्य करने का अवसर मिले जिससे छात्रों की प्रत्येक गतिविधि मे पूर्ण संलग्नता बनी रहे।

(v) गतिविधियों का स्वरूप सरल से कठिन की ओर होनी चाहिये जिससे छात्रो की गतिविधियो मे रुचि बनी रहे तथा धीरे-धीरे छात्र कठिन गतिविधियो को सीखाने मे भी अपनी जिज्ञासा प्रकट करने लगे।

Scanned with CamScanner